(1)

प्र०(1) काव्य प्रयोजन से क्या तात्पर्य है? प्रयोजन कितने प्रकार के होते हैं।

उ०) प्रयोजन से तात्पर्य उद्देश्य से होता है। कोई भी व्यक्ति कोई भी कार्य किसी न किसी उद्देश्य को लेकर ही करता है। कवि ने काव्य का भी कोई न कोई उद्देश्य माना है। ये उद्देश्य कई प्रकार का हो सकता है। कोई धन की प्राप्ति के लिए कोई यश के लिए, कोई लोकमंगल के लिए, कोई आत्मसन्तुष्टि के लिए काव्य की रचना करता है। अनेक विद्वानों ने काव्य के अलग-अलग उद्देश्य बताए हैं। प्राचीन भारतीय आचार्यों ने काव्य के अलग-अलग प्रयोजन बताए है। जो इस प्रकार है।

मम्मट के अनुसार → संस्कृत आचार्य मम्मट ने कहा है।

"काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ॥

इसका अर्थ है, काव्य यश प्राप्ति, अर्थप्राप्ति व्यवहारज्ञान, लोकमंगल के लिए, आलौकिक आनन्द की प्राप्ति के लिए लिखा जाता है।

① यशप्राप्ति ⟹ मनुष्य शरीर के नष्ट हो जाने के बाद भी अपना नाम बनाए रखना चाहता है इसके लिए वह यश की प्राप्ति करना चाहता है। अनेक कवियो ने यश प्राप्ति के लिए काव्य रचना की है। इसका उदाहरण कालीदास आदि कवि है।

② अर्थ प्राप्ति — अनेक कवियों ने धन की प्राप्ति के लिए भी काव्य रचना की है। क्योकि आज के जीवन में अर्थ का बहुत महत्व है। कवि हर्ष, कवि केशव ने रत्नावली काव्य ग्रन्थ की रचना कर अर्थ प्राप्ति की थी। रीतिकाल में अनेक कवि राजाओं की झूठी प्रशंसा कर धन संचय किया करते थे।

व्यवहार ज्ञान — लोक व्यवहार के ज्ञान के लिए भी कवि लोग

काव्य रचना करते थे। जैसे - माता-पिता पुत्र - पिता, बहन-भाई, पति-पत्नी के साथ कैसा सम्बन्ध रखना चाहिए इसका ज्ञान भी- काव्य ग्रन्थों का अध्ययन करके होता है। जैसे- रामायण, महाभारत आदि के द्वारा मनुष्य को व्यवहार ज्ञान की प्राप्ति होती है।

शिवेतरक्षतये (लोकमंगल करना)

अमंगल का विनाश और संसार का मंगल करना भी काव्य का उद्देश्य होता है। उत्तम काव्य के सृजन के लिए समाज में कल्याणकारी कार्यों के लिए भी काव्य का सहारा लिया जाता है।

सद्यः परनिवृतये — (अलौकिक आनन्द की प्राप्ति)

जब किसी रचना को पढ़कर, सुनकर अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होती है। उससे रसानुभूति होती है।

(५)

अतः काव्य का प्रयोजन आनन्दानुभूति भी है। ये आनन्द पाठक और कवि दोनों को मिलता है।

(6) कान्तासम्मित उपदेश →

इस संसार में उपदेश तीन प्रकार के होते है (1) स्वामी द्वारा (2) मित्र द्वारा (3) पत्नी द्वारा। पत्नी द्वारा दिया उपदेश अधिक प्रभावी होता है। जैसे गोस्वामी तुलसी दास जी अपनी पत्नी से प्रेरित होकर इतने बड़े कवि बन गए। रामचरितमानस के रचियता कहे जाने वाले बने। इसी प्रकार बिहारी ने राजा जयसिंह को उपदेश देकर राजकाज में दुबारा लगाया।

नहिं पराग नहीं मधुर मधु नहीं विकास इहि काल।
अलि कलि ही सो बिध्यो आगे कौन हवाल॥

निष्कर्ष - इस प्रकार काव्य के अनेक प्रयोजन होते है। यश, धर्म, अर्थ काम, लोकमंगल, रसानुभूति आदि

इन्हीं प्रयोजनों की प्राप्ति हेतु कवि लोग काव्य साधना करते हैं।